साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 24-30 अप्रैल, 2023, वर्ष-9, अंक-02

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

सरकार को प्राप्त होगा तीन गुना मुनाफा, अनुबंधित महुआ की आपूर्ति वर्ष 2023 में की जाएगी, 110 रुप किलो की दर से होगा निर्यात

लंदन जाएगा मप्र का 200 टन महुआ, मधुवन्या से हुआ अनुबंध

भोपाल। जागत गांव हमार

वन विभाग के सहयोग से मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ की प्रतिबद्धता और अथक प्रयासों से प्रदेश से 200 टन महुआ 110 रुपए प्रति किलो के भाव से लंदन निर्यात किए जाने का अनुबंध हुआ है। यह अनुबंध पिछले साल के अंत में 9वें अंतर्राष्ट्रीय वन मेला में लंदन की ओ फॉरेस्ट की भारतीय इकाई मधुवन्या के साथ हुआ। राज्य लघु वनोपज संघ के प्रबंध संचालक पुष्कर सिंह ने बताया कि महुआ से पृथक से तीन गुना मुनाफा प्राप्त होगा। अनुबंधित महुआ की आपूर्ति वर्ष 2023 में की जाएगी। इसके लिए उमरिया, अलीराजपुर, नर्मदापुरम, सीहोर, सीधी और खण्डवा जिला यूनियन के साथ एग्रीमेंट साइन किए जा रहे है। नर्मदापुरम के सहेली वन धन विकास केन्द्र द्वारा पिछले वर्ष 18 क्विंटल खाद्य ग्रेड महुआ लंदन निर्यात किया जा चुका है। गौरतलब है कि वनमंडल में महुआ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 35 रुपए किलो है। लघु वनोपज की इस अद्भुत पहल से 35 रुपए प्रति किलो का महुआ 110 रुपए प्रति किलो की दर से निर्यात किया जाएगा।

नेट के माध्यम से संग्रहीत

लघु वनोपज संघ द्वारा खाद्य ग्रेड महुआ नेट के माध्यम से संग्रहीत कराया जाएगा। इसके लिए संग्राहकों को प्रक्रिया का प्रशिक्षण भी दिया गया है। संग्राहकों को नेट वितरण जिला यूनियन से होगा। इस विधि से संग्रहीत महुआ गुणवत्ता पूर्ण होगा, जिसकी बाजार में अच्छी कीमत प्राप्त होती है।

100 टन महुआ बैतूल से जाएगा

मध्य प्रदेश के नौ जिलों से महुआ इकट्ठा किया जा रहा है। इसमें से अच्छी किस्म का 100 टन महुआ केवल बैतूल जिले के दक्षिण वन मंडल से जाएगा। आदिवासियों की सालाना आमदनी तीन से चार गुना बढ़ेगी। बैतूल के आदिवासी वन विभाग की मदद से बेहतरीन किस्म का महुआ कलेक्शन कर रहे हैं। मिट्टी के मोल बेचते थे वो अब उनके लिए सोना बन गया है।

पीएम उत्कृष्टता पुरस्कार से कलेक्टर भाव्या मित्तल सम्मानित

जल जीवन मिशन में देश का मॉडल जिला बना बुरहानपुर

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के बुरहानपुर जिले को जल जीवन मिशन के क्रियान्वयन में देश में सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार मिलने की सबसे ज्यादा खुशी बुरहानपुर की महिलाओं को हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में सिविल सेवा दिवस पर गरिमापूर्ण समारोह में बुरहानपुर कलेक्टर भाव्या मित्तल को प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया। यह सरकार और नागरिकों के परस्पर सहयोग और समन्वय का परिणाम है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विकास कार्यक्रमों और प्रक्रियाओं में नवाचार को निरंतर प्रोत्साहित किया है। बुरहानपुर जिले ने जल जीवन मिशन से हर घर में नल से शुद्ध पेयजल पहुंचाने की अभूतपूर्व और गौरवपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है। बुरहानपुर को देश में पहला हर घर जल सर्टिफाइड जिला बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। हर गांव में पानी पहुंचा कर बुरहानपुर ने देश को एक नई दिशा दिखाई है। जल जीवन मिशन में अब तक प्रदेश के 51 लाख 15 हजार से अधिक ग्रामीण परिवारों को नल से जल उपलब्ध कराया गया है। सभी 254 गांव में हर घर जल योजना से पानी पहुंचाया जा रहा है। ये गांव हर घर जल प्रमाणित हुए हैं। वहीं पीएम गति शक्ति में कार्यों को लेकर सीनियर आईएएस अनुराग जैन को भी प्रधानमंत्री ने सम्मानित किया।

पूरा गांव भी हरा-भरा रेखा ने कहा कि अभी सीएम शिवराज और पीएम मोदी के प्रयासों से हमारे गांव में भरपूर पानी आने लगा है। पूरा गांव भी हरा-भरा हो गया है। सबको साफ पानी मिल रहा है। स्वास्थ्य की समस्याएं भी कम हो रही हैं। पहले पानी लाने में जो समय जाता था अब हम अपने दूसरे कामों में लगा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने हमारे लिए बहुत अच्छा काम किया है।

पानी की बड़ी समस्या खत्म गांव की दीपिका श्याम सोनी बताती हैं कि गांव में पानी से संबंधित बहुत सारी परेशानियां थी। नई बहुओं को भी दूर कुओं से पानी लाना पड़ता था। अब पानी मिलने से हमारी बडी समस्या खत्म हो गई है। गांव की प्रियंका खड़से बताती हैं कि रोज चिंता रहती थी कि सुबह पानी भरने जाना है। कई कामकाजी महिलाएं पानी भरने के कारण काम पर जाने में लेट हो जाती थी। अब कई काम आसान हो गए हैं।

हमारे यहां पानी की बहुत समस्या थी। अब हमें भरपूर पानी मिल रहा है। हर घर में पानी पहुंच गया है। सरकार ने पानी की बहुत अच्छी व्यवस्था हमारे गांव में की है। हम सब गांव वालों और ग्राम पंचायत के तरफ से मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री का बहुत आभार मानते हैं।

सविता सागर, सरपंच, ग्राम पंचायत बम्भाड़ा

-केसीसी धारक पशुपालकों के लिए क्रेडिट लिमिट 3 लाख

मप्र के पशुपालकों को देश में सबसे अधिक क्रेडिट कार्ड

भोपाल। जागत गांव हमार

पशुपालन एवं डेयरी मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने बताया कि मार्च 2023 तक देश में सर्वाधिक 2 लाख 36 हजार 331 किसान क्रेडिट कार्ड मध्यप्रदेश के पशुपालकों को उपलब्ध करवाए गए। प्रदेश में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों से पशुपालन के लिए शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर 2 लाख रुपए तक कार्यशील पूंजी केसीसी में उपलब्ध करवाई जा रही हैं। राज्य शासन द्वारा योजना में 01 प्रतिशत सामान्य और समय पर भुगतान करने पर 04 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज अनुदान सहायता दी जाती है। मंत्री ने बताया कि केन्द्र सरकार द्वारा पशुपालन और मत्स्य व्यवसायिक किसानों की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं के लिए किसान क्रेडिट कार्ड सुविधा का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है।

नए को दो लाख की क्रेडिट

वर्तमान किसान क्रेडिट कार्ड धारकों को पशुपालन की गतिविधियों शामिल करते हुए 3 लाख रुपए और नवीन किसान क्रेडिट धारकों को 2 लाख की क्रेडिट लिमिट दी जाएगी। केन्द्रीय पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन मंत्रालय के निर्देशानुसार सभी क्रेडिट कार्ड धारकों को 2 प्रतिशत वार्षिक ब्याज अनुदान और समय पर भुगतान करने पर 3 प्रतिशत का अतिरिक्त ब्याज अनुदान दिया जाएगा।

पालकों को रजिस्ट्रेशन के देने होंगे डेढ़ सौ रुपए, अगर किसी को काटा तो भरना पड़ेगा हर्जाना, मप्र में मई से नियम लागू

सावधान! पालतू कुत्ते का नहीं कराया रजिस्ट्रेशन तो दस गुना पेनाल्टी

भोपाल। जागत गांव हमार

भोपाल में अब कुत्ता पालने के लिए रजिस्ट्रेशन कराना जरूरी होगा। मालिक को इसके लिए बाकायदा 150 रुपए फीस देनी होगी। रजिस्ट्रेशन नहीं कराने पर दस गुना पेनाल्टी देना पड़ेगी। यदि आपका पालतू जानवर किसी को काटता है तो हर्जाना भी भरना पड़ेगा। आपके पालतू जानवर का सड़क पर घूमना भी आपको महंगा पड़ सकता है। हर पालतू पशु को माइक्रोचिप, जियो टैग या किसी अन्य कोई ब्रांडिंग कोड भी दिया जाएगा।

अगले महीने से लागू होंगे नियम: लगातार शिकायतों के बाद नगरीय आवास एवं विकास विभाग ने यह नियम तैयार किए हैं, जो अगले महीने से लागू होगा। शहर के हर जोन में शेल्टर होम बनाए जाएँगे और रहवासी क्षेत्रों में कुत्तों को फीडिंग कराने पर रोक लगेगी। विभाग ने फरवरी के अंतिम सप्ताह में नियम बनाकर निकायों को भेजे थे। इसे एमआईसी के माध्यम से लागू किया जाएगा।

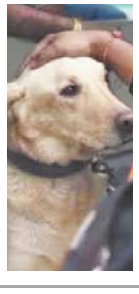

अन्य पालतू जानवरों पर लागू होगा नियम

शहरों में आवारा कुत्ते एक बड़ी समस्या हैं। कई शहरों में कुत्ते के हमले से बच्चों की मौत तक के मामलें सामने आए हैं। वहीं पालतू कुत्तों को भी रहवासी क्षेत्र में घुमाने और गंदगी करने को लेकर विवाद की स्थिति बनती है। कुत्तों के अलावा बिल्ली, गाय व अन्य पालतू जानवरों को भी इन नियमों में शामिल किया गया है। शहर से बाहर पशु अभयारण्य बनेगा। एनिमल बर्थ कंट्रोल ऑपरेशन का अभियान तेज किया जाएगा। वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम जैसे स्थानों पर भी कुत्ते रखे जा सकेंगे। पशु प्रेमियों का भी रजिस्ट्रेशन होगा और उन्हें इसके लिए ट्रेनिंग भी दी जाएगी।

पंजीयन की प्रक्रिया

पालतू जानवर की पहचान के लिए आवश्यक दस्तावेज लगेगा। इसमें जानवर की फोटो, जाति, उम्र और स्वास्थ्य संबंधी विवरण देना होगा। कुत्तों का रैबीज टीकाकरण जरूरी होगा। रजिस्ट्रेशन हर साल नवीनीकरण कराना होगा। 50 रुपए शुल्क भी लगेगा।

हाईकोर्ट के निर्देश पर नियम

हाईकोर्ट के निर्देश पर नियम बनाए गए हैं। इन नियमों को नगरीय निकाय लागू करेंगे। इंस्टीट्यूट ऑफ गुड गवर्नेंस की पॉलिसी में भी मोटे तौर पर यही बातें शामिल हैं। पॉलिसी पर विचार चल रहा है।

-सत्येंद्र सिंह, एडिशनल कमिश्नर, नगरीय आवास एवं विकास

जनवरी 2018 में नगर निगम द्वारा भानपुर की बजाय आदमपुर छावनी में कचरा फेंकना शुरू किया था। वर्ष 2020 में इसके लिए लिए वर्क आर्डर भी जारी हुआ और ठेकेदार को 35 करोड़ रुपए का भुगतान भी हो गया। लेकिन अब तक कचरा कम नहीं हुआ।

भानपुर की तरह शहर का दाग बन रही आदमपुर छावनी लैंडफिल साइट

नगर निगम नहीं कर पा रहा हर दिन 900 मीट्रिक टन कचरे का निष्पादन

» गंध से सांस लेने में हो रही परेशानी, लाल रंग के पानी से कैंसर का मंडरा राह खतरा

भोपाल। जागत गांव हमार

राजधानी में डोर-टू-डोर कलेक्शन और सार्वनिक स्थलों की सफाई के बाद प्रतिदिन 900 मीट्रिक टन से अधिक कचरे का संग्रेहण होता है। लेकिन नगर निगम प्रतिदिन इस कचरे का शत-प्रतिशत निष्पादन नहीं कर पा रहा है। जिसकी वजह से भानपुर खंती में जो कचरा 50 वर्षों में इकठ्ठा हुआ था, उतना बड़ा कचरे का पहाड़ आदमपुर छावनी लैंड फिल साईट में पांच वर्ष में ही बनकर तैयार हो गया। इस कचरे की गंध से आसपास के एक दर्जन से अधिक गांव के रहवासियों को सांस लेने में परेशानी हो रही है, तो वहीं भूजल से निकलने वाले लाल रंग के पानी का इस्तेमाल करने से कैंसर समेत अन्य त्वचा रोग फैलने का खतरा बढ़ गया है। जनवरी 2018 में नगर निगम द्वारा भानपुर की बजाय आदमपुर छावनी में कचरा फेंकना शुरू किया था। इसके बाद भानपुर खंती में ताला लगा दिया था। तब अधिकारियों ने दावा किया था कि अब नई लैंडफिल साइट में प्रतिदिन इकठ्ठा होने वाले कचरे का शत-प्रतिशत निष्पादन किया जाएगा। इसके लिए आदमपुर छावनी में वेस्ट टू एनर्जी प्लांट का वर्क आर्डर वर्ष 2017 में ही जारी कर दिया गया था। लेकिन इसका निर्माण अब तक नहीं हो पाया है। जबकि आदमपुर छावनी में छह माह बाद से ही कचरे के पहाड़ नजर आने लगे थे। शुरुआत में यहां जमीन पर लाइनर बिछाया गया था, जिससे कचरे का असर जमीन पर ना हो और भूजल भी दूषित ना हो। लेकिन अधिकारियों की लापरवाही कि वजह से पांच वर्ष बीतने के बाद भी लैंडफिल साइट में उतने कचरे का निष्पादन नहीं हो रहा है, जितना प्रतिदिन शहर में एकत्रित किया जाता है।

कचरा खंती के काले पानी से फसल हो रही बर्बाद

आदमपुर छावनी में पांच लाख मीट्रिक टन से अधिक कचरा इकठ्ठा है। इसके बाद प्रतिदिन यहां 900 मीट्रिक टन कचरा फेंका जा रहा है। इससे आसपास दुर्गंध तो फैतली ही है, खंती से निकलने वाला काला पानी खेतों में जा रहा है। जिससे फसल खराब हो रही है। वहीं भूजल दूषित होने से बोरिंग व नल से लाल रंग का पानी निकल रहा है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों की मानें तो पानी के रंग बदलने का कारण उसमें अत्याधिक मात्रा में मिला हुआ आयरन है। जिसका लंबे समय तक इस्तेमाल करने से कैंसर समेत अन्य बीमारियों का भी खतरा है।

कागजों में कर दिया कचरे का निष्पादन

आदमपुर छावनी में भले ही कचरे का पहाड़ खड़ा है, लेकिन अधिकारियों ने कागजों में इसका शत-प्रतिशत निष्पादन कर दिया। इससे उनकी वाहवाही भी हुई और ठेकेदार से ईनाम भी मिला। दरअसल नगर निगम ने इसका काम मेर्सस ग्रीन रिसोर्स सालिड वेस्ट मैनेंजमेंट कंपनी को दिया था। इसके लिए 333 रुपए मीट्रिक टन के हिसाब से भुगतान तय हुआ। वर्ष 2020 में इसके लिए लिए वर्क आर्डर भी जारी हुआ और ठेकेदार को 35 करोड़ रुपये का भुगतान भी हो गया। लेकिन अब तक कचरा कम नहीं हुआ।

आदमपुर छावनी में क्षमता अनुसार कचरे का निष्पादन हो रहा है। जल्द ही यहां गीले कचरे से सीएनजी व खाद और सूखे कचरे से चारकोल बनना शुरु हो जाएगा। इसके बाद प्रतिदिन यहां आने वाले कचरा का शत-प्रतिशत निसष्पादन किया जा सकेगा।

- केवीएस चौधरी, नगर निगम आयुक्त

गीले कचरे से सीएनजी, सूखे से बनेगा चारकोल

हालांकि, आदमपुर छावनी में पहुंचने वाले करीब 400 मीट्रिक टन कचरे से सीएनजी और जैविक खाद बनाने के लिए यहां दो एकड़ जमीन पर प्लांट लगाया जाना है। इसका निर्माण कार्य शरू कर दिया गया है। वहीं सूखे कचरे से चारकोल बनाने के लिए लैंडफिल साइट के सामने पांच एकड़ जमीन पर एनटीपीसी का प्लांट लगाया जाएगा। इन दोनों परियोजनाओं का निर्माण कार्य शुरु कर दिया गया है, लेकिन इनका काम शुरु होने में एक वर्ष का समय लगेगा।

मप्र में 35 हजार से अधिक किसानों की फसलें ओलावृष्टि

ओलावृष्टि में 25 फीसदी फसल बर्बाद तो सरकार कराएगी बेटी का विवाह

भोपाल। जागत गांव हमार

ओलावृष्टि और असमय वर्षा के कारण फसल बर्बाद हो गई है और घर में बेटी का विवाह-निकाह है, तो परेशान न हों। राज्य सरकार ने किसानों को मुख्यमंत्री कन्या विवाह-निकाह योजना का लाभ देने का निर्णय लिया है। उनके लिए आवेदन जमा करने और विवाह कार्यक्रम के आयोजन की कोई समयसीमा भी नहीं रखी गई है। सामाजिक न्याय विभाग ने इसके आदेश जारी कर दिए हैं। प्रदेश में 35 हजार से अधिक किसानों की फसलें ओलावृष्टि, असमय वर्षा और तेज हवा से खराब हुई हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया और किसानों से बात की है। इस दौरान कई किसानों ने बताया कि फसल खराब होने से उनको बेटी का विवाह टालना पड़ेगा। इस स्थिति को देखते हुए सीएम ने किसानों को मुख्यमंत्री कन्या विवाह-निकाह योजना का लाभ देने का निर्णय लिया है। बता दें कि इसके बाद प्रदेश में फिर से ओलावृष्टि हुई है, इसके लिए सर्वे कराया गया है।

जेवर और अन्य सामग्री देने के नियम भी बदले

सरकार ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह-निकाह योजना में नवविवाहिता को जेवर एवं अन्य सामग्री देने के नियम भी बदल दिए हैं। सामग्री देने में गड़बड़ी सामने आने के बाद 18 मार्च 2023 को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुरहानपुर के शाहपुर में लाड़ली बहना कार्यक्रम में यह घोषणा की थी। सामाजिक न्याय विभाग ने इसके भी आदेश जारी कर दिए हैं। अब 11 हजार की बजाय वधु को 49 हजार को अकाउंट पेयी चेक दिया जाएगा। जिससे वह जो चाहे सामग्री खरीद सकेगी। जबकि छह हजार रुपए उस निकाय को दिए जाएंगे, जो विवाह कार्यक्रम आयोजित करेगा।

प्रदेश में मिलट्स के रेडी टू-ईट की पैकेजिंग करेगा आईआईएचएम

भोपाल। इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट भोपाल मिलेटस और उससे बने उत्पादों को आम जनता तक पहुंचाएगा। इसके लिए ग्रामया और ग्रामीण विकास के लिए बनी प्राइबेट लिमिटेड कंपनी के बीच ओएमयू हुआ है। दोनों मिलकर बाजरा, रागी, ज्वार आदि से संबंधित उत्पादों का प्रचार प्रसार और उनकी मार्केटिंग करेंगे। दोनों के एमओयू से आम लोगों को मिलेट के फायदे के संबंध में जानकारी दी जाएगी। इससे बनने वाले उत्पादों के लिए मेले और सार्वजनिक जगहों पर स्टॉल लगाए जाएंगे। यह दोनों संगठन मोटे अनाज आधारित उत्पादों का प्रचार करेंगे और बाजार का विस्तार करेंगे, ताकि मिलेट से संबंधित उत्पादों की मांग में प्रदेश भर बढ़ोतरी की जा सके। गौरतलब है कि राज्य और केंद्र सरकार का पूरा फोकस मोटे अनाजों के उत्पदन पर है। जिसकों लेकर कई तरह की छूट भी किसानों को दी जा रही है।

उड़द की उन्नत खेती, किसानों को कम लागत में होगा अच्छा मुनाफा

डॉ. शिव्या गोखले
शस्य विज्ञान विभाग
ब्रह्मानन्द महाविद्यालय राठ
हमीरपुर (उप्र)

दलहनी फसलों में उड़द का प्रमुख स्थान है और विश्व स्तर पर उड़द के उत्पादन में भारत अग्रणी देश है। भारत के मैदानी भागों में इसकी खेती मुख्यत: खरीफ सीजन में होती है। परंतु विगत दो दशकों से उड़द की खेती ग्रीष्म ऋतु में भी लोकप्रिय हो रही है। देश में उड़द की खेती महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु तथा बिहार में मुख्य रूप से की जाती है। उड़द की दाल में 23 से 27 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है। उड़द मनुष्यों के लिए स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ-साथ भूमि को भी पोषक तत्व प्रदान करता है। इसकी फसल को हरी खाद के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। भारत में उड़द को कलाई, माष, माह, और उरद के नाम से भी पुकारा जाता है।

उड़द की दाल में अनेक प्रकार के पोषक तत्व जैसे-फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन बी काम्प्लेक्स, कैल्शियम और प्रोटीन के तत्व प्रचुर मात्रा में उपस्थित होते है। इसके अलावा इसमें अन्य दालों की तुलना में ल्यूसीन, लाईसीन, आइसोल्यूसिन, आरजिनीन और फास्फोरस अम्ल और एमिनो एसिड की 8 गुना अधिक मात्रा पाई जाती है, जिस कारण इसका वैज्ञानिक मान अधिक है। भारत में उड़द की खेती खरीफ और जायद दोनों ही मौसम में कर सकते है। उड़द दलहन फसल होने के कारण वायुमंडल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके भूमि की उर्वरा शक्ति मे वृद्धि करती है। इसके अतिरिक्त उड़द को उगाने से खेत मे पत्तियां एवं जड़ रह जाने के कारण भूमि मे कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ जाती है। उड़द की फसल को हरी खाद के रूप मे उपयोग किया जा सकता है।

खेती के लिए जयवायु और भूमि: हल्की रेतीली, दोमट मिट्टी उड़द की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है। वहीं पानी निकासी की उत्तम व्यवस्था होना चाहिए। जबकि मिट्टी का पीएच मान 6.5 से 7.8 के मध्य होना चाहिए। इसकी बोवनी के लिए खेत की दो-तीन जुताई बारिश से पहले करना चाहिए। वहीं अच्छी बारिश होने के बाद बोवनी करना चाहिए इससे फसल की बढ़वार में मदद मिलती है इसके लिए लाइन से लाइन की दूरी 30 सेंटीमीटर, पौधों से पौधों की दूरी 10 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। वहीं बीज को 4 से 6 सेंटीमीटर की गहराई पर बोवनी करें। गर्मी के दिनों में उड़द की बोवनी फरवरी के तीसरे सप्ताह से अप्रैल के पहले सप्ताह तक की जा सकती है। जो किसानों के लिए लाभदायक है।

चितकबरा रोग प्रतिरोधी उन्नत किस्म

वीबीजी-04-008, वीबीएन-6, माश-114, को.-06. माश-479, पंत उर्द-31, आईपीयू-02-43, वाबन-1, एडीटी-4 एवं 5, एलबीजी-20 आदि। खरीफ सीजन की किस्में केयू-309, केयू-99-21, मधुरा मिनीमु-217, एकेयू-15 आदि। रबी सीजन की किस्में के.यू-301, एकेयू-4, टीयू-94-2, आजाद उर्द-1, मास-414, एलबीजी-402, शेखर-2 आदि। शीघ्र पकने वाली किस्में- प्रसाद, पंत उर्द-40 तथा वीबीएन-5। इन कस्मों में उत्पादन ज्यादा लिया जा सकता है।

1-एकड़ उड़द की खेती में आने वाली कुल लागत और आय

औसतन, एक एकड़ उड़द की खेती में शामिल खेती की कुल लागत 15136 रुपए है। उड़द की खेती में शामिल लागत उपरोक्त लागत के आधार पर भिन्न हो सकती है। विभिन्न कारक जैसे कीट और रोग की घटना और खरपतवार की घटना आदि।

एक एकड़ उड़द की खेती से कुल आय: 20-04-2023 को मार्केट यार्ड में 8800 रुपए प्रति क्विंटल है। तो, 9 क्विंटल बेचने के लिए कुल 79200 रुपए मिलेंगे।

1-एकड़ उड़द की खेती से शुद्ध लाभ: एक एकड़ उड़द की खेती में शामिल शुद्ध आय इस प्रकार है- 79200- 15136 = 64064 रुपए। एक एकड़ भूमि में उड़द की खेती से औसतन 64064 रुपए का शुद्ध लाभ किसानों को मिलेगा।

जिले में हो रही लगभग 400 हेक्टेयर में खेती

राजगढ़ के किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो रही ककड़ी की खेती

राजगढ़। जागत गांव हमार

मप्र का राजगढ़ ककड़ी की खेती का हब बनता जा रहा है। जिले में तकरीबन 400 हेक्टेयर में इसकी खेती हो रही है। सालाना 1 करोड़ 60 लाख रुपये की फसल बेची जा रही है। ज्यादातर ककड़ी की खपत लोकल में ही हो जाती है। बाकी बची फसल को अन्य प्रदेशों में निर्यात किया जाता है। अगर किसान 1 हेक्टेयर में ककड़ी की फसल लगाता है तो उसे 200 क्विंटल की उपज हासिल होती है। इस दौरान 100 दिनों में उन्हें तकरीबन 4 लाख रुपये का फायदा हो जाता है। किसान जगन्नाथ बताते हैं कि मैंने एक बीघे में खीरा-ककड़ी की फसल लगा रखी है। 200 क्विंटल की पैदावार हुई है। यह फसल 60 से 70 दिनों के कम समय में आ जाती है। मार्केट में ककड़ी की डिमांड है, इसलिए अच्छा मुनाफा हासिल हो रहा है।

फाइबर ककड़ी खाने के फायदे

डाक्टरों का कहना है कि गर्मी में ककड़ी खाने के अनगिनत फायदे हैं। इसमें काफी फाइबर पाया जाता है। बहुत सारे विटामिन, मिनरल्स, यूट्रन होते हैं. कैलोरी कम होती है. ककड़ी में विटामिन बी, सी कोपर, मैग्नीशियम विटामिन के पाया जाता है, यह डाइजेशन के लिए फायदेमंद है। यह चेहरे के ग्लो को बढ़ाने में मदद करती है। साथ ही आपकी बॉडी के यूरिक एसिड को किडनी के माध्यम से कम करने का प्रयास करती है।

लोगों को खूब भा रही राजगढ़ की फाइबर ककड़ी

मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले की ककड़ी देशभर में लोगों को खूब भा रही है। किसान भी इसकी खेती से खूब लाभ कमा रहे हैं। उद्यानिकी विभाग उपसंचालक पीआर पांडे ने बताया कि जिले में गर्मी के सीजन में तालाब के किनारे ककड़ी की खेती हो रही है।

किसानों को हो रहा मुनाफा

राजगढ़ जिले के नरसिंहगढ़ जिला मुख्यालय से 4 किलोमीटर दूर ग्राम गादिया के किसान जयराम कुशवाहा ने बताया कि ककड़ी की खेती में कम समय में ज्यादा फायदा होता है। 2 महीने में फसल आ जाती है। आधी फसल को नरसिंहगढ़ और व्यावरा मंडी में फसल बेच चुका हूं। अभी तक मुझे 50 हजार रुपये का मुनाफा मिल चुका है। वहीं, राजगढ़ के ग्राम गादीया के किसान विक्रम सिंह ने बताया कि एक बीघा जमीन में खीरा ककड़ी की फसल लगाई एक से डेढ़ महीने बाद फसल आ गई थी। 12 क्विंटल तक का माल बेच चुके हैं।

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने लॉन्च किया मोबाइल ऐप, होगा मददगार

असली-नकली बीज पहचानेगा 'साथी' किसानों को नुकसान से भी बचाएगा

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

बीज उत्पादन की चुनौतियों से निपटने, गुणवत्तापूर्ण बीज की पहचान और बीज प्रमाणीकरण के लिए बनाए गए साथी पोर्टल व मोबाइल एप्लीकेशन को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने लॉन्च किया। उत्तम बीज-समृद्ध किसान की थीम पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सहयोग से एनआईसी ने इसे बनाया है।

इस मौके पर नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि भारत सरकार कृषि के समक्ष विद्यमान चुनौतियों और कठिनाइयों को विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से दूर करने की लगातार कोशिश कर रही है। साथी पोर्टल भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जब इसका प्रयोग नीचे तक शुरू होगा तो कृषि के क्षेत्र में यह क्रांतिकारी कदम साबित होगा।

मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री तोमर ने कहा भारत के लिए कृषि का बड़ा महत्व है। बदलते परिदृश्य में यह महत्व और बढ़ गया है। पहले हमारे लिए खेती में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का ही लक्ष्य रहता था, लेकिन वर्तमान में दुनिया की अपेक्षाएं भी भारत से बढ़ रही हैं। ऐसे में कृषि की तमाम चुनौतियों, जलवायु परिवर्तन आदि से निपटते हुए हम दुनिया की मदद कर सकें, यह हमारी जिम्मेदारी है। तोमर

ने कहा कि कृषि में बीज, कीटनाशक, उर्वरक और सिंचाई की प्रमुख भूमिका रहती है। गुणवत्ताविहीन या नकली बीज कृषि की ग्रोथ को प्रभावित करते हैं। इससे किसानों का नुकसान होता है, देश के कृषि उत्पादन में भी बड़ा फर्क आता है। समय-समय पर यह बात आती रही है कि हमें ऐसी व्यवस्था बनाना चाहिए, जिससे नकली बीजों का बाजार ध्वस्त हो और गुणवत्ता वाले बीज किसान तक पहुंचे, इसके लिए साथी पोर्टल लांच हो गया है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में सामने आ रहे नए प्रकार के कीट फसलों को प्रभावित कर रहे हैं, जिस पर पूरी तरह से रोक लगाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को अपना रिसर्च बढ़ाना चाहिए। यदि हम यह नुकसान बचाने में सफल हो गए तो पूरे कृषि उत्पादन का 20 फीसदी बचा सकते हैं।

अभी ये पहला चरण, दूसरा जल्द

केंद्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि अभी साथी (सीड ट्रेसेबिलिटी, ऑथेंटिकेशन एंड होलिस्टिक) पोर्टल का पहला चरण आया है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि दूसरे फेज में ज्यादा समय नहीं लगना चाहिए। इसका किसानों को पूरी तरह से लाभ मिले, इसके लिए भी जागरूकता बढ़ाने के प्रयास किए जाना चाहिए। इस सिस्टम के अंतर्गत क्यूआर कोड होगा, जिससे बीज को ट्रेस किया जा सकेगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि विज्ञान केंद्रों, राज्य सरकारों के माध्यम से इस संबंध में ट्रेनिंग दिया जाना चाहिए। उन्होंने सीड ट्रेसेबिलिटी सिस्टम से सभी राज्यों को जुड़ने का आग्रह किया। साथी पोर्टल गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली सुनिश्चित करेगा, बीज उत्पादन श्रृंखला में बीज के स्रोत की पहचान करेगा। इस प्रणाली में बीजश्रृंखला के एकीकृत 7 वर्टिकल शामिल होंगे- अनुसंधान संगठन, बीज प्रमाणीकरण, बीज लाइसेंसिंग, बीज सूची, डीलर से किसान को बिक्री, किसान पंजीकरण और बीज डीबीटी। वैध प्रमाणीकरण वाले बीज केवल वैध लाइसेंस प्राप्त डीलरों द्वारा केंद्रीय रूप से पंजीकृत किसानों को बेचे जा सकते हैं जो सीधे अपने पूर्व-मान्य बैंक खातों में डीबीटी के माध्यम से सब्सिडी प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज अहूजा, संयुक्त सचिव (बीज) पंकज यादव व अन्य अधिकारी मौजूद थे, वहीं राज्यों-आईसीएआर के प्रमुख अधिकारी वर्चुअल जुड़े थे।

इंदौर में लगा मिलेट्स मेला, लड्डू और पफ का लोगों ने लिया स्वाद

इंदौर। अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के तहत इंदौर प्रशासन द्वारा 16 अप्रैल को मिलेट्स मेले का आयोजन किया गया। यह आयोजन अवसर पर जिला प्रशासन इंदौर द्वारा लोगों को मिलेट्स(मोटे अनाज) के फायदे, उपयोगिता को लेकर जागरूकता लाने के लिए किया गया। यह आयोजन इंदौर की 56 दुकान पर किया गया। जहां बड़ी संख्या में लोगों ने मिलेट्स मेले में अपने स्टॉल सजाए। मिलेट के प्रति प्रेरित करने के लिए प्रतियोगिताएं भी हुईं।

56 दुकान में लगे मिलेट्स के मेले में यह मैसेज देने का प्रयास किया गया है कि मिलेट्स का इस्तेमाल करना सेहत की दृष्टि से कितना उपयोगी है। वहीं मिलेट्स के इस मेले की सबसे विशेष बात यह रही कि मिलेट्स से बने पफ और लड्डू भी देखने को मिले। मेले में महिला एवं बाल विकास विभाग का स्टाल भी देखने को मिला। जहां मिलेट्स से तैयार किए गए विभिन्न प्रकार के पकवान भी सजाए गए। जिनमें ज्वार का दलिया, बाजरे की खिचड़ी, मसाला ओट्स, बाजरे की टिकिया शामिल है। मेले के दौरान ईट राइट इन्दौर के तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य हर एक नागरिक को मिलेट्स के उपयोग के प्रति प्रेरित करना है।

मेले में बड़ी संख्या में शामिल हुए लोग

मेले के दौरान बड़ी संख्या में लोग भी इस मेले में सहभागिता देते हुए नजर आए। मेले में आए सभी लोग ध्यान से स्टाल में लगी खाद्य सामग्रियों को देखकर सेहत की दृष्टि से उनकी उपयोगिता को देख एवं समझ रहे थे। मिलेट्स मेले में स्टाल लगाने वाले गोपाल मेहता ने बताया कि जिस प्रकार के आज के दौर में बीमारियां बढ़ रही हैं। उसको देखते हुए मिलेट्स का उपयोग बहुत जरूरी है। मिलेट्स जहां हमारे सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं। इतना ही नहीं मिलेट्स और उससे बनी चीजों का सेवन करने से वजन भी नहीं बढ़ता है।

मगरमच्छ जैसी दिखने वाली ये मछली किसी भी वातावरण में सरवाइव करने में सक्षम

भोपाल के बड़े तालाब में मिली अमेरिकी मछली एलीगेटर गार

भोपाल। जागत गांव हमार

भोपाल के बड़े तालाब में एक ऐसी मछली मिली है, जो कि भोपाल तो क्या पूरे देश में कहीं नहीं पाई जाती है। इस मछली का नाम एलीगेटर गार है और यह मछली अमेरिका में पाई जाती है।

दरअसल, भोपाल के खानूगांव निवासी अनस खान खानूगांव से लगे तालाब के किनारे पर मछली पकड़ने गए थे। इस दौरान उनके कांटे में एक मछली फंसी, यह मछली अन्य मछलियों से एकदम अलग थी। करीब ढाई किलो वजनी और डेढ़ फीट लंबी इस मछली का मुंह मगरमच्छ के जबड़े जैसा है। बड़े तालाब में पहली बार इस तरह की मछली मिली है। देखने में हूबहू मगरमच्छ जैसी दिखने वाली ये मछली एलिगेटर गार है। इसे क्रोकोडाइल फिश भी कहते हैं। वह डिस्कवरी चैनल देखने के शौकीन हैं और उन्होंने इस तरह की मछलियां डिस्कवरी चैनल में देखी हैं। लेकिन जब बड़े तालाब में ये मिली तो वह देखकर हैरान रह गए। मालूमात करने पर उन्हें पता चला कि एक समुद्री मछली है। सामान्यत: यह मछली अमेरिका में पाई जाती है। जिसे एलीगेटर गार कहा जाता है। भोपाल में जो मछली मिली है उसकी लंबाई तकरीबन डेढ़ फीट के आसपास है, जबकि इस प्रजाति की मछली की लंबाई 10 से 12 फीट के बीच होती है और इसकी उम्र तकरीबन 20 साल हो जाती है। बताते हैं ये खतरनाक टाइप की होती है और मनुष्य पर भी हमला कर सकती है।

भोपाल कैसे पहुंची, ये जांच का विषय

फिशिंग एक्सपर्ट शारिक अहमद का कहना है कि भोपाल में यह मछली बड़े तालाब में कैसे आई, कहां से आई इस बारे में फिलहाल कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन अंदाजा यह लगाया जा सकता है कि भोपाल में कोलकाता और आंध्र प्रदेश से मछली का बीज आता है। संभवत उसी बीच के साथ इस एलीगेटर गार का बीज भोपाल आया है। इस मछली की प्रकृति होती है कि यह किसी भी वातावरण में सरवाइव कर जाती है। यही वजह है कि अमेरिका में पाई जाने वाली ये मछली भोपाल के बड़े तालाब में भी सरवाइव कर गई।

दो साल पहले स्मगलिंग कर इंदौर लाई गई थी

बात दो साल पहले दिसंबर 2021 की है। इंदौर में एलिगेटर गार फिश को चोरी छिपे एक्वेटिक पोर्ट में रखकर मुंबई से लाया गया था। इंदौर एयरपोर्ट पर डीआरआई की इंफोर्समेंट टीम ने जब संबंधित व्यक्ति से मछली पालन के दस्तावेज मांगे, तो वह उपलब्ध नहीं करा सका। स्मगलिंग की आशंका के चलते मछली को जब्त कर लिया गया था।

बुंदेलखंड के लिए रामबाण-बेर-पलाश-महुआ

डॉ. आरके प्रजापति
वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़

बुंदेलखंड को प्रकृति ने सूखे से लड़ने के लिए तीन पेड़ दिए थे बेर, पलाश और महुआ। सूखे इलाकों में महुआ गरीबों के पोषण के लिए सबसे सस्ती और उत्तम फसल है। सूखे महुए की फसल सात साल तक खराब नहीं होती। सूखे के सालों में महुए का इस्तेमाल किया जा सकता है। बुंदेलखंड में कई ऐसे पौध प्रजातियां हैं, जो किसान की परम्परागत फसलें नहीं हैं, जैसे फिकारा कुसुम आदि। प्रकृति ने बुंदेलखंड को ये वरदान दिया था कि जब-जब सूखा पड़ेगा तब ये तीन पेड़ ज्यादा फलेंगे-फूलेंगे और सूखे का रामबाण समाधान उपलब्ध कराएंगे।

महुआ सपोटेसी परिवार से संबंधित है, जो अपने मीठे फूलों के लिए जाना जाता है। महुआ भारतवर्ष के सभी भागों में होता है और पहाड़ों पर तीन हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है। इसकी पत्तियां पांच सात अंगुल चौड़ी, दस बारह अंगुल लंबी और दोनों ओर नुकीली होती हैं। पत्तियों का ऊपरी भाग हलके रंग का और पीठ भूरे रंग की होती है। हिमालय की तराई व पंजाब के अतिरिक्त सारे उत्तरीय भारत तथा दक्षिण में इसके जंगल पाए जाते हैं, जिनमें वह स्वच्छंद रूप से उगता है। पर पंजाब में यह सिवाय बागों के, जहां लोग इसे लगाते हैं और कहीं नहीं पाया जाता। महुआ खाद्य उत्पादों के विकास के लिए आदिवासी लोगों के बीच बहुत सारे जातीय मूल्य हैं। गैर-किण्वित उत्पादों में हलवा, मीठी पुरी, बर्फी शामिल हैं जबकि किण्वित उत्पादों में महुआ दारू या महुली शामिल हैं।

दवा के रूप में उपयोग: इसके कई फाइटोकेमिकल गुणों के कारण पारंपरिक रूप से इसका उपयोग सिरदर्द, दस्त, त्वचा और आंखों की बीमारियों सहित कई बीमारियों के लिए दवा के रूप में भी किया जाता है। वर्तमान में रोजगार की बढ़ती संभावनाओं के साथ किसानो के आजीविका में सुधार के लिए इसके भविष्य की संभावनाओं के साथ संरचना (सूखे और ताजे फूल), उपयोगिता, औषधीय और पोषक तत्वों की वजय से इसकी बहुत जरूरी है की महुवा के पौध रोपण को बढ़ाया जाए। आदिवासी महुआ के फूलों का उपयोग त्वचा रोग, सिरदर्द, पित्त और ब्रोंकाइटिस के इलाज के लिए करते हैं। स्तनपान कराने वाली महिलाओं को स्तन के दूध की वृद्धि के लिए फूलों का रस दिया जाता है।

शर्करा के समृद्ध स्रोत हैं महुआ के फूल: महुआ के फूल शर्करा के समृद्ध स्रोत हैं जो इसके मीठे स्वाद के लिए जिम्मेदार है और इसका उपयोग स्वदेशी या आधुनिक मादक पेय बनाने के लिए किया जा सकता है। महुआ के फूलों में अच्छी मात्रा में विटामिन-सी होता है जो इसकी एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि के लिए जिम्मेदार होता है। महुआ के फूल में कैरोटीन होता है जो विटामिन-ए का अग्रदूत है। फूलों में कैल्शियम और फास्फोरस जैसे खनिजों की भी अच्छी मात्रा होती है। महुआ के फूलों में कुछ मात्रा में प्रोटीन और वसा भी मौजूद होता है। महुआ के औषधीय गुणों का पता लगाने के लिए विभिन्न शोध किए गए हैं-फूल जैसे कृमिनाशक, जीवाणुरोधी, एनाल्जेसिक, हेपेटोप्रोटेक्टिव, एंटीऑक्सिडेंट और एंटीकैंसर के लिए उपयोगी है।

महुआ के उपयोग: महुआ के हर हिस्से में विभिन्न पोषक तत्व मौजूद हैं। कई आदिवासी समुदायों में इसकी उपयोगिता की वजह से इसे पवित्र माना जाता है। महुआ हमारी कई समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है।

1. महुआ के फूल से शरीर में **हीमोग्लोबिन** का स्तर बढ़ता है। जिन

महीलाओ को ब्रेस्ट फीडिंग कराने में दिक्कत होती हो उन्हें भी महुआ के फूलों का सेवन दूध के साथ करना चाहिए। 2. पेट में **अल्सर की समस्या दूर करता है महुआ का फूल**-महुआ के फूल से पेट में अम्ल (एसिड) बनने की समस्या दूर होती है। पेट में अल्सर की समस्या दूर करने के लिए महुआ के फूलों को पानी में उबालें और उस पानी का सेवन सुबह-शाम करें। **3.बुखार में** इस्तेमाल करें महुआ का फूल- महुआ के फल को 2 कप पानी में उबाल लें, जब पानी आधा हो जाए तो उसे एक कप में निकलकर पियें और उसमें शहद और नींबू भी डाल सकते हैं। महुआ के रस से बुखार, फ्लू जैसी बीमारियां भी दूर होती हैं। **4. ब्रोंकाइटिस में** करें महुआ के फूल का इस्तेमाल-सांस से जुड़ी बीमारी को ब्रोंकाइटिस कहते हैं। महुआ के फूलों को पीस लें, एक गिलास में छान लें, जो रस बचेगा उसका सेवन करें तो ब्रोंकाइटिस की बीमारी में राहत मिलेगी और गले की सूजन कम हो जाएगी। 5. महुआ का तेल **बढ़ाता है बालों की उम्र**-अगर आपको मजबूत, सिल्की और लंबे बाल चाहिए तो आपको महुआ का तेल इस्तेमाल करना चाहिए। रोजमैरी के तेल में महुआ के तेल की कुछ बूंदें मिलाकर बालों में लगाने से यह काफी फायदा पहुंचाता है। हफ्ते में एक बार इस तेल के इस्तेमाल से बाल काफी मजबूत हो सकते हैं। 6. महुआ का तेल मिटाए **जोड़ों का दर्द**-महुआ में सूजन मिटाने का गुण होता है। यह शरीर को किसी दर्द से छुटकारा दिला सकता है और इंफेक्शन से भी बचाता है। अगर आपके जोड़ों में दर्द है तो आप महुआ के तेल की मालिश करें, इससे राहत मिल सकता है। 7. **सिरदर्द में राहत**-सिर दर्द की समस्या से छुटकारा दिलाने में महुआ का तेल काफी फायदेमंद साबित होता है। माइग्रेन की समस्या में भी इस तेल का फायदा मिल सकता है। 8. **मुहांसे या दाग-धब्बों से छुटकारा**-महुआ का तेल स्किन के लिए रामबाण साबित होता है। इसे इस्तेमाल करने से मुहांसे या स्किन पर दाग-धब्बों की समस्या सॉल्व हो जाती है। 9. **कीड़े काटने में राहत**-अगर कभी भी किसी को कीड़े काट ले और लाल दाने होने लगे तो उस पर तत्काल महुआ का तेल लगाने से राहत मिल जाती है। 10. **मच्छरों से सुरक्षा**- महुआ का तेल मच्छरों को भगाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। इससे लंग्स में समस्याएं भी नहीं होती। 11. महुए का धार्मिक महत्व भी है। **रेवती नक्षत्र का आराध्य वृक्ष है।** 12. महुए के बीज से तेल निकालने के बाद वह खली के रूप में पशुओं को खिलायी जाती है। 13. **बायोडीजल या एथेनॉल** के लिए। 14. **महुआ से जैम** बनाया जा सकता है। 15. हस्त पवित्रीकरण **(हैण्ड सेनेटाइजर)** के रूप में। 16. **नेत्र रोग** दूर करें-फूलों के रस का उपयोग नेत्र रोगों के इलाज के लिए किया जाता है। 17. **रक्तपित्त का इलाज**-रक्तस्राव को रोकने के लिए फूलों के रस का उपयोग किया जाता है। 18. डायरिया और कोलाइटिस को ठीक करें फूल का चूर्ण-दस्त और कोलाइटिस को ठीक करने के लिए फूल एक कसैले के रूप में कार्य करता है। 19. नपुंसकता और सामान्य दुर्बलता को दूर करें दूध में मिला हुआ फूल। 20. बवासीर ठीक करे घी में तले हुए फूल महुआ का फूल बवासीर को ठीक करने के लिए कूलिंग एजेंट के रूप में काम करता है।

इनका कहना है

महुवे के गैर-किण्वित फूल से प्यूरी और सॉस, ताजा फूल से रस लेके बेकरी और कन्फेक्शनरी में स्वीटनर के रूप में उपयोग जा सकता है। महुवा से जैम, मुरब्बा, महुआ केंडी, महुआ टॉफी, महुआ केक, महुआ स्क्वैश,महुआ लड्डू, एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर पेय बनाने की परियोजना में काम किया है। भारत के देसी पड़ों की उपयोगता को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

-कु. अंतरा ओझा, बुंदेलखंड में महुवा के सह-उत्पाद

बुंदेलखंड में महुआ के प्रति जागरुकता लाने के लिए जिले में पौधरोपण जैसे प्रोग्राम कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किया जाएगा। महुआ की आधुनिक खेती, खाद्य प्रसंशा करण, फूल कलेक्शन तकनीकियों पे ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाया जाएगा।

-डॉ. बीएस किरार, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़

महुआ बुंदेलखंड के लिए उत्तम बागवानी का पेड़ है, जिसके लिए महुआ की कम दिन में फल देने वाली विकसित किस्मों को जिले में नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद उप्र से लाया जाएगा, जिनकी कम उचाई पे ही 3- वर्षों में किसानो को फल प्रति पौधा 15 किलोग्राम प्राप्ति हो सकेगा। छोटे उचाई के करण महआ की बागवानी के साथ अन्तर्वर्ती फसलों की खेती करके किसानों को आर्थिक लाभ मिल सकेगा। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ द्वारा जिले में महुआ की बगवानी का प्रचार प्रसार किया जाएगा।

- डॉ. वीके सिंह, डीन कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़

वैज्ञानिकों ने दी चेतावनी: कूनो नेशनल पार्क में छोड़ जा रहे क्षमता से अधिक चीते

साल 2022 के शरद ऋतु और 2023 के सर्दियों में, नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से 20 चीतों को लाकर भारत के कूनो नेशनल पार्क में छोड़ा गया था। ताकि 70 साल पहले भारत से विलुप्त होने के बाद इन्हें फिर से स्थापित किया जा सके। हालांकि वैज्ञानिकों का कहना कि यह सोच बहुत अच्छी है, लेकिन इसे ठीक से हासिल करना इतना आसान नहीं है। नामीबिया में लीबनिज-आईजेडडब्ल्यू के चीता अनुसंधान परियोजना के वैज्ञानिक इनके फिर से स्थापित करने की योजना में कमियां होने की बात कर रहे हैं। दक्षिणी अफ्रीका में, चीते काफी बड़े इलाकों में फैले हुए हैं और प्रति 100 वर्ग किलोमीटर में एक से भी कम चीता रहता है। कूनो नेशनल पार्क में चीतों के लिए बनाई गई योजना में माना गया है कि अधिक शिकार, चीतों को बनाए रखेगा, हालांकि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि चीतों की अधिक संख्या शिकार की अधिक संख्या पर निर्भर करती है। शोध टीम ने कहा, क्योंकि कूनो राष्ट्रीय उद्यान छोटा है, इसलिए इस बात की आशंका अधिक है कि छोड़े गए जानवर पार्क की सीमाओं से बहुत आगे निकल जाएंगे और पड़ोसी गांवों के लोगों के साथ इनका संघर्ष हो सकता है। एशियाई चीता (एसिनोनिक्स जुबेटस वेनाटिकस), विश्व स्तर पर लुप्तप्राय चीता की एक उप-प्रजाति है। यह 70 साल पहले भारतीय उपमहाद्वीप में रहती थी, उसके बाद यह विलुप्त हो गई। सितंबर 2022 और फरवरी 2023 में, नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से एसिनोनिक्स जुबेटस-जुबेटस उप-प्रजाति के कुल 20 चीतों को भारत के मध्य प्रदेश राज्य के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में छोड़ा गया था। जिसे भारत में इन बिल्लियों की एक नई आबादी के पहले केंद्र के रूप में देखा जा रहा है। कूनो राष्ट्रीय उद्यान लगभग 17 गुणा 44 किलोमीटर का एक बिना बाड़ वाला जंगली इलाका है। स्थानीय शिकार की संख्या के आधार पर, गणना की गई कि कुनो नेशनल पार्क में 21 वयस्क चीतों को रखा जा सकता है। जो कि प्रति 100 वर्ग किलोमीटर में तीन चीतों के घनत्व के बराबर का इलाका है। नामीबिया में चीतों के स्थानीय व्यवहार पर लंबे समय तक अध्ययन तथा शोध किए गए हैं, जिसमें कहा गया है कि किसी भी जगह पर क्षमता से अधिक चीतों को नहीं रखा जाना चाहिए। साथ ही पूर्वी अफ्रीका में तुलनात्मक शोध के आधार पर, लाइबनिज इंस्टीट्यूट फॉर जू एंड वाइल्डलाइफ रिसर्च के वैज्ञानिक भी पार्क में जरूरत से ज्यादा चीतों को रखने के खिलाफ हैं। जीव वैज्ञानिकों ने बताया कि, प्राकृतिक परिस्थितियों में आमतौर पर प्रति 100 वर्ग किमी में एक वयस्क चीता रहता है। यह न केवल नामीबिया के लिए सच है, बल्कि पूर्वी अफ्रीका में सेरेन्गेटी पारिस्थितिकी तंत्र में पारिस्थितिक रूप से बहुत अलग-अलग स्थितियों के लिए भी सही है, जहां शिकार का घनत्व बहुत अधिक है। इस परिप्रेक्ष्य को लेकर, टीम ने नए निवास स्थान में चीतों के स्थानीय व्यवहार के बारे में पूर्वानुमान लगाया, विवादास्पद मुद्दों की पहचान की और दोबारा उन जगहों पर उन्हें स्थापित करने की योजना की छिपी हुई मूल धारणाओं की पहचान की गई। शोध के मुताबिक ये मान्यताएं चीता की सामाजिक-स्थानिक प्रणाली के महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज करती हैं। नर चीते दो अलग-अलग स्थानीय तरीकों को अपनाते हैं। नर आमतौर पर अपने इलाके पर कब्जा कर लेते हैं। जबकि यहां मौजूदा नर बिना कब्जा किए इलाकों में घूमते और रहते हैं, जैसा कि अक्सर मादाएं करती हैं। ये नर पहचानी गई जगहों को लेकर कभी-कभार दूसरों पर आक्रमण भी करते हैं। चीता रिसर्च प्रोजेक्ट के डॉ. जॉर्ग मेल्जाइमर कहते हैं कि चीतों के इलाके एक-दूसरे की सीमा से सटे नहीं होते हैं, वे हमेशा एक दूसरे से 20 से 23 किलोमीटर दूर होते हैं। इलाकों के बीच की जगह का किसी भी नर द्वारा बचाव नहीं किया जाता है, यह बिना इलाके वाले नर जिसे फ्लोटर्स कहते हैं और मादाओं के लिए रहने और गुजरने की जगह होती है।

आर्थिक सहायता योजना का लाभ किसानों को नहीं, खाद उत्पादन कंपनियों को हो रहा!

उदारीकरण के बाद के दौर में कृषि उत्पादन खर्चों में भारी वृद्धि हुई है। सार्वजनिक खर्चों में कमी, कृषि में दी जाने वाली आर्थिक सहायता प्रक्रिया में भारी गोल माल एवं सेवा सुविधाओं का निजीकरण इसके प्रमुख कारण हैं। कृषि के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता की प्रक्रिया को पूरी तरह खत्म करना तो संभव नहीं हुआ है, क्योंकि सरकार को डर है कि ऐसा कदम बहुत ही अलोकप्रिय होगा, लेकिन सरकार द्वारा कुछ ऐसे कदम उठाए गए हैं, जिससे किसानों खासकर गरीब किसानों को इन सहायता से होने वाला लाभ प्रभावित हुआ है। कृषि उत्पादों के लिए पोषण आधारित आर्थिक सहायता योजना को इस तरह परिवर्तित किया गया है, जिससे इसका लाभ किसानों के बजाय मुख्यतः खाद उत्पादन कंपनियों को हो रहा है। इसके अलावा नव उदारवादी नीतियों के चलते देसी खाद उत्पादक कंपनियों के हितों की अनदेखी करते हुए भारत की ज्यादा से ज्यादा निर्भरता विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादित खाद के आयात पर हो गई है। इसका विनाशकारी प्रभाव तब देखने को मिला, जब 2021 में वैश्विक परिघटनाओं के चलते खाद की आपूर्ति में। आई कठिनाइयों से खाद की बेहद कमी हो गई है। यह संकट 2022 के खरीफ मौसम में भी बरकरार है और अभी जल्दी इसका निपटारा संभव नहीं दिखता इस कमी की भरपाई किसानों द्वारा ज्यादा कीमत अदा कर की जा रही है। इसके साथ-साथ ऊर्जा क्षेत्र में सुधार का अर्थ है कि कम कीमत पर कृषि क्षेत्र में आपूर्ति की जाने वाली ऊर्जा की प्रक्रिया बहुत से राज्यों में कमजोर हो गई है। सरकार ऊर्जा क्षेत्र में जो बिजली सुधार कानून आ रही है, उस कानून से वितरण की प्राणाली का पूरी तरह। निजीकरण हो जाएगा और कम कीमत पर कृषि क्षेत्र को दी जानेवाली पूरी व्यवस्था का अंत हो जाएगा। इसका अर्थ है ऊर्जा आपूर्ति के लिए अतिरिक्त खर्च का वहन। भारत सरकार द्वारा कृषि अनुसंधान और विस्तार में खर्च होने वाली राशि में खत्म हो चुकी है. कृषि अनुसंधान एवं विस्तार विभाग पर कृषि के सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 0,22 प्रतिशत खर्च किया जा रहा है। इसके चलते किसान आधुनिक कृषि उत्पादन एवं उससे संबंधित सूचनाओं के बारे में निजी कंपनियों या उत्पाद बेचने वाले डीलरों पर निर्भर होने के लिए मजबूर हो गए हैं।

प्रमुख सचिव बोले-गुणवत्ता की भी करें नियमित समीक्षा

गांवों पानी व्यवस्था दुरुस्त रखने नियमित करो मानिटरिंग

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी संजय कुमार शुक्ल ने कहा है कि ग्रीष्मकाल में ग्रामीण पेयजल व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए समस्त जिलों के विभागीय अधिकारी नियमित समीक्षा करें। उन्होंने कहा कि पेयजल स्त्रोतों में जैविक प्रदूषण को रोकने क्लोरिनेशन के लिए आवश्यक केमिकल्स की सतत उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। प्रमुख सचिव के निर्देशानुसार मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत प्रति सप्ताह जिले की सभी ग्राम पंचायतों में पेयजल प्रदाय की विस्तृत समीक्षा करेंगें। अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) विकासखंड स्तर पर साप्ताहिक समीक्षा करेंगें। साथ ही समीक्षा बैठकों में जन-प्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी।

कार्ययोजना बना कर करें कारवाई

प्रमुख सचिव ने निर्देश दिए हैं कि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग का अमला लगातार ग्रामीण क्षेत्र का भ्रमण करे। विगत वर्षों के अनुभव के आधार पर ग्रामों-बसाहटों में पेयजल समस्या का आंकलन किया जाए। स्थानीय जन-प्रतिनिधियों के साथ चिन्हांकित ग्रामों-बसाहटों में पेयजल समस्या के निराकरण के लिए ग्राम और बसाहटवार कार्य-योजना तैयार कर कारवाई सुनिश्चित की जाए।

विद्युत सप्लाई के कारण प्रभावित न हो

प्रमुख सचिव ने कहा कि जिलों की सभी नल जल प्रदाय योजनाएं चालू रहें। कोई भी नल-जल योजना विद्युत समस्या या विद्युत कनेक्शन के विच्छेद होने से बंद न रहें। जल जीवन मिशन में प्रगतिरत जिन योजनाओं में जल स्त्रोत तथा पाइप लाइन के कार्य पूर्ण हो गए हैं, उन योजनाओं में सीधे पंपिंग कर पेयजल की आपूर्ति प्रारंभ कराई जाए।

जल परिवहन की तैयारी करें

प्रमुख सचिव ने निर्देश दिए हैं कि ग्रीष्मकाल में जिन ग्रामों में पेयजल व्यवस्था के लिए पेयजल परिवहन ही अंतिम विकल्प रह जाता है, ऐसे ग्रामों में पेयजल व्यवस्था के लिए जल की गुणवत्ता का परीक्षण कर जल-स्त्रोतों का चिन्हांकन कर लिया जाए। शासकीय जल स्त्रोत उपलब्ध न होने की स्थिति में निजी जल स्त्रोतों के अधिग्रहण की कार्यवाही की जाए। साथ ही ग्राम पंचायतों में उपलब्ध पानी के टेंकर अच्छी स्थिति में रखे जाएं।

24 घंटे में पूर्ण करें सुधार कार्य

प्रमुख सचिव ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में हैंडपंपों के संचालन की नियमित समीक्षा की जाए। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन यंत्री सुनिश्चित करें कि बंद हैंडपंपों का सुधार कार्य 24 घंटे में पूरा किया जाए। विगत वर्षों में जिन हैण्डपंपों के नलकूप का जल स्तर नीचे चले जाने से उन नलकूप पर सिंगल फेस विद्युत मोटरपंप स्थापित कर पेयजल व्यवस्था सुचारू की गई थी। उन सिंगल फेज विद्युत मोटरपंपों की जांच कराएं। आवश्यकतानुसार सुधार कार्य कराकर नियमित समीक्षा की जाए। सीएम हेल्पलाइन में हैंडपंपों के संधारण कार्य तथा नल जल प्रदाय योजनाओं से संबंधित शिकायतों के निराकरण की नियमित समीक्षा की जाए।

586 किसान कर रहे संतरा, आम, अमरूद, नींबू, सीताफल और मौसम्बी की खेती

योजनाओं का लाभ उठा रहे किसान ले रहे बंपर उत्पादन

फलों की खेती से चमक उठी किसानों की किस्मत

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के निमाड़ अंचल में इन दिनों किसान फलों की खेती कर अच्छा खासा मुनाफा कमा रहे हैं, जहां किसान नर्मदा किनारे संतरा, आम, अमरूद, नींबू, सीताफल और मौसम्बी की खेती करते नजर आ रहे हैं। किसान फलों की अलग-अलग उपज से बंपर फायदा भी प्राप्त कर रहे हैं। उधर, सरकार ने भी किसानों को फायदा पहुंचाने के अलग-अलग योजनाएं चलाई हैं, जिनके जरिए किसान बंपर फसल उत्पादन के साथ ही बंपर फायदा भी प्राप्त कर रहे हैं। कुलमिलाकर, देखा जाए तो इन दिनों निमाड़ में इन दिनों फलों की फसल खेतों में लहरा रही है, जहां किसानों को भी बंपर फायदा फसल के जरिए मिल रहा है।

निमाड़ की उर्वरा भूमि और नर्मदा का जल हर मौसम की फसलों के लिए अनोखा वरदान है। नर्मदा नदी के जल को कल-कल और निर्मल रखने के लिए मप्र शासन ने वर्ष 2017 में नमामि देवी नर्मदे योजना प्रारम्भ की। इस योजना में नदी के दोनों किनारों पर 2-2 किमी के दायरे में हरियाली की चादर बिछाने का निर्णय लिया गया था। 2017-18 और 218-19 में बड़वाह, महेश्वर और कसरावद के 809.01 रकबे में 586 किसानों ने संतरा, आम, अमरूद, नींबू, सीताफल और मौसम्बी की खेती से हरियाली की चादर बिछाई है। इन किसानों को योजना के तहत 438.23 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया गया। ये बागीचे किसानों को भरपूर फल प्रदान कर अच्छा मुनाफा भी देने योग्य हुए हैं।

पोते ने तैयार किया जैविक बगीचा

करीब 50 साल पहले 1970 में बहेगांव के नवलसिंह मांगीलाल सोलंकी ने निमाड़ के गर्म मौसम में मौसम्बी की खेती का आगाज किया था। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ यह बात पोते (राजेन्द्र सोलंकी) के मन में बस गई। जब पौते के हाथों में खेती की बागडोर आयी तो मौसम्बी का बगीचा लगाने का सपना जागा। इस बीच मप्र द्वारा नमामि देवी नर्मदे योजना के तहत हरियाली बिछाने का निर्णय लिया गया। तो सबसे पहले राजेन्द्र ने अपने पिता भगवान मांगीलाल सोलंकी के साथ मिलकर बगीचा बसाने की फिर शुरुआत की। पहली बार मौसम्बी के बगीचे में एक पौधे पर करीब 1-1 क्विंटल तक के फल आए।

जैविकता से फलों में मिठास

राजेन्द्र के बागीचे की मौसम्बी की एक खासियत यह भी है कि 6 वर्षों से खेत में कोई भी रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक का उपयोग नहीं किया। इस कारण फलों की ताजगी और शक्कर सी मिठास आई है। 2017 में राजेंद्र के खेत में रकबे में करीब 1700 पौधे और पिता भगवान सोलंकी के खेत में 1110 लगाए थे। पहली ही फसल से उन्हें अच्छा मुनाफा हुआ है। कुलमिलाकर, देखा जाए तो मध्यप्रदेश के निमाड़ अंचल में इन दिनों किसान फलों की खेती कर अच्छा खासा मुनाफा कमा रहे हैं, जहां किसान नर्मदा किनारे संतरा, आम, अमरूद, नींबू, सीताफल और मौसम्बी की खेती करते नजर आ रहे हैं।

40 से 60 प्रतिशत तक अनुदान

किफायती होने के साथ अधिक फायदा देता है बकरी पालन

» राज्य शासन द्वारा बैंक ऋण एवं अनुदान पर बकरी इकाई योजना संचालित है

» योजना में 10 बकरी और एक बकरा देने का है प्रावधान

भोपाल। जागत गांव हमार

पशुपालन एवं डेयरी मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने कहा है कि बड़े पशुओं की तुलना में बकरी पालन पशुपालकों के लिए आर्थिक रूप से काफी फायदेमंद है। राज्य शासन द्वारा बैंक ऋण एवं अनुदान पर बकरी इकाई योजना संचालित है। इसमें हितग्राही को 10 बकरी और एक बकरा दिया जाता है। इकाई की लागत 77 हजार 456 रुपए है। सामान्य वर्ग के हितग्राही को इकाई लागत का 40 प्रतिशत और अनुसूचित जाति-जनजाति को इकाई लागत का 60 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। वर्ष 2022-23 में सामान्य वर्ग के 169, अनुसूचित जनजाति के 71 और अनुसूचित जाति के 75 लोगों को योजना का लाभ दिया गया।

किसका कितना मूल्य

बकरियों को पीपीआर, ईटी खुरपका, गलघोंटू और चेचक के टीके जरूर लगवाएं। यह टीके मेमनों को 3-4 माह की उम्र के बाद लगते हैं। साथ ही अंतः परजीवी नाशक दवाइयां साल में दो बार जरूर पिलाएं। नवजात मेमने को आधे घंटे के भीतर बकरी का पहला दूध पिलाने से उसकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता बहुत बढ़ जाती है।

वातावरण के अनुसार करें प्रजाति का चुनावः बकरी की प्रजाति का चुनाव स्थानीय वातावरण को ध्यान में रख कर करना चाहिए। कम बच्चे देने वाली या अधिक बच्चे देने वाली बकरियों से कमाई एक-सी ही होती है। उन्नत नस्ल की प्राप्ति के लिए बाहर से बकरा लाकर स्थानीय बकरियों के संपर्क में लाना चाहिए।

दो दिवसीय कार्यशाला में मंत्री सखलेचा बोले

जावद में दो मिलेट प्रोसेसिंग इकाई लगेंगी

भोपाल। जागत गांव हमार

मिलेट मिशन के तहत दो मिलेट प्रोसेसिंग उद्योग जावद कृषि उपज मंडी परिसर में स्थापित किए जाएंगे जिससे प्रेरणा लेकर सैकड़ों किसान भी खाद्य प्र-संस्करण उद्योग लगाएं। एमएसएमई मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने जावद में खाद्य प्र-संस्करण उद्योगों की स्थापना पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला एवं उन्नत कृषकों की संगोष्ठी के समापन समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। इस मौके पर सांसद सुधीर गुप्ता, सीएफटीआरआई मैसूर की संचालक डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिह एंव वैज्ञानिकों का दल, ईएण्डवाय के प्रतिनिधि सुनील कुमार सांई अन्य जन-प्रतिनिधि, कृषि वैज्ञानिक एंव विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा बडी संख्या में किसान उपस्थित थे। मंत्री ने कहा कि खाद्य प्र-संस्करण उद्योग स्थापित कर, किसान अपनी आमदनी चार गुना तक बढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे कृषि वैज्ञानिकों ईएण्डवाय के प्रतिनिधियों, सीएफटीआरआई के वैज्ञानिकों से निरंतर संवाद कर, फूड प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करने के संबंध में जानकारी हासिल करें।

उद्योग स्थापित कर आय को बढ़ाएं किसान

मंत्री ने कहा कि कलस्टर में छोट-छोटे कृषि आधारित खाद्य प्र-संस्करण उद्योग स्थापित कर, अपनी कृषि आय को बढ़ाएं। एमएसएमई विभाग के ईएण्डवाय प्रतिनिधि सुनील कुमार सांई ने खाद्य प्र-संस्करण उद्योग स्थापना के लिए लगने वाली मशीनरी, आवश्यक लायसेंस, लागत, कच्चे माल की उपलब्धता, मार्केटिंग, पैकेजिंग आदि के बारे में विस्तार से बताया। उदयपुर से आये प्रकाश सारस्वत ने कांट्रेक्ट फार्मिंग, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, हर्बल आधारित उद्योग की स्थापना, मिलेट के खाद्य प्र-संस्करण उद्योग की स्थापना आदि के बारे विस्तार से बताया।

किसानों को आना होगा आगे सांसद कहा, कि क्षेत्र का किसान, समृद्ध, प्रगतिशील और नई तकनीक, नई खेती को अपनाने वाला किसान है। क्षेत्र के किसान कृषि में नये-नये प्रयोग करते रहते हैं। समय के साथ किसानों को खाद्य प्र-संस्करण उद्योगों की स्थापना के लिए आगे आना होगा। फूड प्रोसेसिंग कर किसान अपने उत्पाद से अच्छा लाभ अर्जित कर सकते है। उन्होंने क्षेत्र के किसानों से मिलेट के उत्पादन के लिए आगे आने का आह्वान भी किया।

सहयोग करने का विश्वास

कार्यशाला को संबोधित करते हुए सीएफटीआरआई मैसूर की संचालक डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिंह ने खाद्य प्र-संस्करण उद्योग स्थापित करने के लिए तकनीकी, डेवलपमेंट, रिकल्ड डेवलपमेंट, आवश्यक मशीनरी की उपलब्धता के कार्य में हर संभव सहयोग करने का विश्वास दिलाया। कार्यशाला में प्रतिभागियों को वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रकार के 100 से अधिक खाद्य प्र-संस्करण, उद्योगों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

बेब डिजायनर की नौकरी छोड़ वर्मीकम्पोस्ट स्टार्टअप से सलाना लाखों रुपए की कर रहीं कमाई

इंदौर से लगे गांवों में पहुंच महिलाओं को भी कर रहीं जागरुक और दे रहीं प्रशिक्षण

पूजा ढाई हजार किसानों के साथ स्कूल कॉलेज में पढ़ा रहीं जैविक खेती का पाठ

पूजा अभी लगभग 2500 सौ किसानों के साथ जुड़ी हुई है। इसके साथ ही वह स्कूल-कालेजों में जा कर छात्रों को भी आर्गेनिक फार्मिंग और वर्मीकम्पोस्ट के लाभ को बताती हैं। उनका लक्ष्य जैविक खेती को बढ़ाना और किसानों को सजग करना है।

डॉ शशिकान्त सिंह, इंदौर।

इंदौर मध्यप्रदेश की पूजा यादव ने कंप्यूटर साइंस में बी-एससी किया हैं। मुम्बई में ग्यारह साल के आई टी करियर में तीन साल बहुत अच्छे पद पर रहीं हैं। कुछ व्यक्तिगत परिवारिक कारणों से उनको वेब डिजाइनर की नौकरी छोड़ इंदौर लौटना पड़ा। इसी बीच उनके पिता को कैंसर हो गया जो तीसरे स्टेज पर था। वो अपने पिता को जल्द से जल्द स्वस्थ देखना चाहती थी। इस कारण से अच्छे इलाज के साथ साथ डॉक्टर से अपने पिताजी के लिए डाइट की जानकारी ली। डाक्टर ने जैविक और पौष्टिक भोजन कराने की सलाह दी। पूजा ने जब बाजार में पता किया तो पता चला जैविक भोज्य पदार्थों की लूट मची है। 50 रुपए की वस्तु 200 रुपए में मिल रही है। तब खुद से अपने घर पर ही जैविक सब्जियां और फल उगाने का निर्णय लिया। जिससे अपने परिवार को शुद्ध भोजन उपलब्ध करा सके। अपनी बालकनी से शुरू कर धीरे-धीरे आधे बीघा जमीन पर सब्जियां लगाया और पौधों के पोषण के लिए गोबर के खाद का प्रयोग किया। उसमें सफलता भी मिली किया। अब अपने शिक्षा एवं कार्य के अनुरूप गूगल पर गोबर की खाद के लिए जानकारी एकत्र करना शुरू किया। तब पता चला की वर्मीकम्पोस्ट इससे अच्छा है। पूजा बताती हैं कि सबसे पहले अपने प्रयोग के लिए वर्मीकम्पोस्ट तैयार किया और अपने कुछ मित्रों को भी दिया। परिणाम बहुत अच्छा रहा। इस परिणाम ने इस कार्य को अब व्यवसायिक स्तर पर करने के लिए उनको प्रेरित किया। आगे बताती हैं कि जो एक वर्मीकम्पोस्ट बेड अपने निजी प्रयोग के लिए तैयार किया था। उसमें तीन वर्मीकम्पोस्ट बेड के लिए केंचुआ तैयार हो गया था। तीन से छह और फिर बारह इसी तरह यह सिलसिला बढ़ते-बढ़ते एक सौ पच्चीस बेड तक पहुंच गया। अब पूजा केवल वर्मी कम्पोस्ट ही नहीं केंचुआ भी बेचती हैं। एक बार चल पडे उनके पैर यही नहीं रुके। वो हर किसान तक पहुंच कर जैविक खेती और उसके लाभ को समझना चाहती थी। इसके लिए उन्होंने ने सोशल मीडिया के प्रयोग को अपना हथियार बनाया और इसके लिए एक यूट्यूब चैनल भी बनाया है। जिसके द्वारा वह किसानों को जैविक खेती कैसे करें और उसके महत्व को बताने लगीं। मध्य प्रदेश मे जहां भी कुछ किसान समूह में इकठ्ठा होते हैं और जैविक खेती करने की इच्छा जताते हैं। वहां जैविक खेती की जानकारी देती है।

केंचुआ खाद में पौधों के लिए सभी आवश्यक पोषक तत्व मौजूद

पूजा बताती हैं कि वर्मीकम्पोस्ट एक संतुलित खाद है। इसमें नत्रजन फासफोरस तथा पोटाश की मात्रा गोबर की खाद से अधिक होती है। इसके अलावा सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे तांबा कैल्शियम गंधक कोबाल्ट भी मिलते हैं। केंचुआ खाद में पौधों के लिए आवश्यक लगभग सभी पोषक तत्व पर्याप्त एवं संतुलित मात्रा में मौजूद होते हैं। जो पौधों को सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं अतः वर्मीकम्पोस्ट के उपयोग से पौधों का विकास अच्छा होता है। वर्मीकम्पोस्ट जलग्राही होता है। जो वातावरण से नमी व सिचाई के रूप में पौधों को दिए गए पानी को सोख कर भूमि से वाष्पीकरण तथा निक्षालन द्वारा पानी के नष्ट होने को रोकती है अतः वर्मीकम्पोस्ट का खेत में उपयोग करने पर पौधों में बार-बार पानी देने की आवश्यकता नहीं होती है। वर्मीकम्पोस्ट में अनेक तरह के सूक्ष्म जीव नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु, फासफोरस घोलक जीवाणु, पौधों की बढवार में वृद्धि करने वाले जीवाणु, एक्टीनोमाइसिटीज, फफूंद और सैलूलोज व लिगनिन को विघटित करने वाले पॉलीमर्स भारी संख्या में मौजूद रहते हैं। ये सूक्ष्म जीव भूमि में मौजूद पेड पौधों के अवशेष तथा अन्य जैविक कचरे को सड़ाने और पौधों की बढ़वार में सहायक होते हैं। वर्मीकम्पोस्ट में उपस्थित एक्टीनोमाइसिटीज एन्टीबायोटिक पदार्थों का सृजन करते हैं। जिनसे पौधों में कीटों से बचाव की क्षमता बढ़ जाती है। कम्पोस्ट में सात गुना एक्टीनोमाइसिटीज होता है। जो घुलनशील है और पौधों को तुरन्त प्राप्त हो जातें हैं। केचुआ गंदगी फैलाने वाले हानिकारक जीवाणुओं को खाकर उसे लाभदायक ह्यमूस में परिवर्तित कर देते हैं। इसमें खरपतवारों के बीज नहीं होते हैं। अतः खेत में इसका प्रयोग करने पर किसी भी तरह के खरपतवारों की समस्या नहीं होती है। जबकि गोबर के खाद या कम्पोस्ट के उपयोग से खेत में खरपतवार अधिक उगते है। वर्मीकम्पोस्ट में मानव तथा पौधों को नुकसान पहुंचाने वाले किसी भी तरह के जीवाणु नहीं होतें है।

लंबे समय तक बनी रहती है भूमि की उर्बरता

वर्मीकम्पोस्ट के उपयोग से भूमि के भौतिक गुणों जैसे रन्ध्रावकाश, जलधारण क्षमता, मृदा संरचना, सूक्ष्म जलवायु, तत्वों को रोकने व पोषण क्षमता एवं रासायनिक गुणों जैसे- कार्बन- नाइट्रोजन के अनुपात में कमी कार्बनिक पदार्थों के अपघटन में सुधार और जैविक गुणों जैसे-नाइट्रोजन स्थिरीकरण एवं फास्फोरस एक्टीनोमाइसिटीज आदि की संख्या में पर्याप्त सुधार होता है। परिणामस्वरूप भूमि की उर्वरता लम्बे समय तक बनीं रहती है। वर्मीकम्पोस्ट में विद्युत आवेशित कण होता है। जो पौड़ी को मृदा से पोषक तत्व लेने में सहायता करता है। वर्मीकम्पोस्ट के उपयोग से भूमि के तापमान, नमी, स्वास्थ्य, तथा संचरण एवं माईक्रोक्वलाइमेट की एकरूपता के लिए अनुकूलता पैदा होती है। वर्मीकम्पोस्ट के कणों पर पेराट्रोपिक झिल्ली होती है, जिससे कम्पोस्ट में मौजूद नमीं का शीघ्रता से वाष्पीकरण द्वारा ह्रास नहीं होता।

केंचुआ खाद का फसलों की पैदावार पर गुणकारी प्रभाव

केंचुए के शरीर से कई प्रकार के एन्जाइम जैसे पैप्टेज-प्रोटीन पाचन के लिए, एमाइलेज-स्टार्च व ग्लाईकोजन पाचन के लिए, लाइपेज-वसा पाचन के लिए, सेलूलेज-सेलूलेज पाचन के लिए, इनवर्टेज-शर्करा पाचन के लिए, तथा कैटाइनेज-काइटिन पाचन के लिए कार्य करता है। अतः स्राव के रूप में उत्पादित एंजाइमों से केंचुआ खाद की गुणवत्ता के साथ साथ फसलों की पैदावार पर गुणकारी प्रभाव होता है। केंचुओं के शरीर का 85 प्रतिशत भाग पानी से बना होता है। इसलिए सूखे की स्थिति में अपने शरीर का 60 प्रतिशत पानी का ह्रास हो जाए तो भी केंचुआ जिन्दा रह सकता है। वर्मीकम्पोस्ट के उपयोग से कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार आता है, उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की भंडारण क्षमता एवं अधिक मूल्य पर बिक्री होने से आय में भारी वृद्धि होती है।

कृषि विज्ञान केंद्र वरिष्ठ वैज्ञानिक एसपी सिंह ने किसानों को बताया मृदा नमूना लेने की विधि

भिंड की जमीन में पोषक तत्वों की कमी, मिट्टी की जांच जरूरी

लहर (भिंड)। जागत गांव हमार

फसलों से अच्छा उत्पादन मिले तथा खेतों की जमीन पोषक तत्वों से परिपूर्ण रहे इसके लिए समय-समय पर खेतों की मिट्टी की जांच कराना आवश्यक होता है। मिट्टी की जांच कराने से किसानों को उनकी जमीन में पाए जाने वाले पोषक तत्व का सही-सही अनुमान लग जाता है। जिससे वह आगामी फसलों में समुचित पोषक तत्व प्रबंधन करके फसलों से अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। यह बातें किसानों के बीच कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एसपी सिंह द्वारा रोन विकासखंड के नौधनी गांव में कही गई। इस दौरान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा किसान के खेत में जाकर किसानों को मृदा नमूना लेने की विधि को प्रदर्शन के माध्यम से समझाया गया।

डॉ. सिंह ने बताया कि लगातार फसलें लेने के कारण जमीन के अंदर पोषक तत्वों का ह्रास हो रहा है। जिले की भूमि में जीवांश अथवा ऑर्गेनिक कार्बन के अलावा नाइट्रोजन, गंधक, जिंक जैसे कई प्रमुख पोषक तत्वों की कमी देखी जा रही है। इसके चलते

किसानों को उनकी फसलों से क्षमता के अनुरूप उत्पादन नहीं मिल पा रहा। जमीन के अंदर पाए जाने वाले पोषक तत्वों की जानकारी के अभाव में किसान असंतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं जिससे उनकी खेती पर आने वाली लागत भी बढ़ रही है। इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि किसान समय-समय पर अपने खेतों की मिट्टी की जांच कराते रहें। किसानों को यह बात भली प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि बेहतर उत्पादन लेने के लिए मृदा परीक्षण कराना बहुत आवश्यक होता है। उन्होंने बताया कि मिट्टी की जांच के माध्यम से किसानों को उस में पाए जाने वाले मुख्य और सूक्ष्म पोषक तत्वों के बारे में भली प्रकार से जानकारी लग जाती है, जिससे वह आवश्यक मात्रा में ही उर्वरकों का प्रयोग कर सकते हैं। इससे किसान की लागत कम होती है। उन्हें अच्छा उत्पादन भी प्राप्त होता है। फसल को बढ़वार के लिए तीन मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश के अलावा 12 अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। जिसके बारे में सही-सही जानकारी मृदा परीक्षण के बाद ही किसानों को हो पाती है।

इसलिए किसानों को चाहिए कि वह अपने खेतों की मिट्टी की जांच समय-समय पर जरूर कराते रहें

इस अवसर पर केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. बीपीएस रघुवंशी द्वारा मौके पर ही किसानों को मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में प्रदर्शन करके समझाया गया। उन्होंने बताया कभी भी घूरे के पास से, पेड़ के नीचे से तथा नाली के पास से मृदा नमूना नहीं लेना चाहिए। मृदा नमूना हमेशा खेत में बीच से तथा खेत के चारों कोनों से लेकर साफ थैली में रखकर प्रयोगशाला ले जाना चाहिए। इस दौरान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. नरेंद्र सिंह भदोरिया द्वारा बताया गया कि खेतों की मिट्टी की ऊपर की 4 से 6 इंच की परत ही उपजाऊ होती है। इसलिए गर्मी की जुताई तथा खेतों की मेड़ बंदी खेत खाली होने पर कर लेना चाहिए। ऐसा करने से बरसात शुरू होने पर खेतों की उपजाऊ मिट्टी कट के बाहर नहीं जाती तथा वर्षा जल जमीन के अंदर भली प्रकार से संचित हो पाता है। कार्यक्रम में गांव में संचालित एफपीओ के संचालक तथा 3 दर्जन से अधिक किसान प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

किसानों की बढ़ जाएगी आय

बासमती धान की नई किस्में फायदेमंद

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में धान का उत्पादन के लिए हमारे वैज्ञानिकों ने कई सुगंधित और एडवांस किस्में विकसित की हैं। ये धान की म्यूटेंट वैरायटी हैं, जो साधारण किस्मों से कहीं बेहतर उत्पादन देती है। इन किस्मों में कीट-रोगों के प्रकोप की संभावना भी कम ही रहती है, इसलिए कीटनाशक का खर्च भी बच जाता है। वैसे तो छत्तीसगढ़ राज्य एक से बढ़कर एक सुगंधित, औषधीय और विशिष्ट गुणों वाले धान के उत्पादन के लिए मशहूर है, लेकि बढ़ती जलवायु परिवर्तन संबंधी चुनौतियों के बीच अब परंपरागत किस्मों की अवधि और ऊंचाई को कम करने और उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने की कवायद चल रही है और इस तरह तैयार होती हैं धान की म्यूटेंट किस्में।

कौन सी हैं ये म्यूटेंट किस्में- धान की परंपरागत सुगंधित किस्मों के पौधों की लंबाई अधिक होती है। साथ ही ये किस्में लंबी अवधि में पककर तैयार होती है। क्लाइमेट चेंज के तौर पर लंबे पौधे वाला धान खेतों में बिछ जाता है। कई बार लंबी अवधि वाली किस्में कटाई के नजदीक आते ही मौसम की मार से त्रस्त हो जाती है। यही वजह है कि नुकसान की कम से कम करने के लिए म्यूटेंट किस्में विकसित की जा रही है। भाभा अटॉमिक रिसर्च सेंटर मुंबई के सहयोग से इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में म्यूटेशन ब्रीडिंग द्वारा धान की सुगंधित किस्मों के बीज तैयार किए जा रहे हैं।

पूसा बासमती-6 (पूसा 1401)

पूसा बासमती-6 वैरायटी सिंचित इलाकों में बुवाई के लिए अनुकूल बताई गई है। ये धान की बौनी किस्म है, जिसके पौधे तेज हवा-आंधी में भी नहीं गिरते। इस धान से निकलने वाला एक-एक चावल समान आकार का होता है। ये किस्म 55 से 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत पैदावार देती है।

उन्नत पूसा बासमती-1 (पूसा- 1460)

पूसा बासमती-1 किस्म को भी सिंचित अवस्था में बुवाई के लिए अनुकूल बताया जाता है। ये किस्म 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। झुलसा रोग के प्रतिरोधी पूसा बासमती-1 से प्रति हेक्टेयर 50 से 55 क्विंटल उत्पादन ले सकते हैं।

पूसा बासमती- 1121

धान की खेती वाले सभी इलाकों, खासतौर पर सिंचित इलाकों में धान की सुगंधित किस्म पूसा बासमती- 1121 की बोवनी कर सकते हैं। ये वैरायटी 140 से 145 दिनों के अंदर तैयार हो जाती है। ये धान की अगेती किस्म है, जिसका दाना लंबा, पतला और स्वादिष्ट होता है। पूसा बासमती- 1121 से प्रति हेक्टेयर में 40 से 45 क्विंटल उपज ले सकते हैं इन किस्मों के अलावा पूसा सुगंध-5, पूसा सुगंध-3, पूसा सुगंध-2 किस्में जो 120 से 125 दिनमें पककर तैयार हो जाती है और प्रति हेक्टेयर 40 से 60 क्विंटल तक औसत उत्पादन देती हैं। कृषि विशेषज्ञों की मानें तो धान की सीधी बिजाई करने पर फसल के खेत में गिरने या बिछने की संभावनाएं कम हो जाती हैं। इससे समय और श्रम की भी बचत होती है।

वैज्ञानिक तकनीक से करें प्रबंधन तो कमा सकते हैं अच्छा मुनाफा

मिर्च की खेतीः लगने वाले रोगों से बचाव और उनका उचित उपचार

भोपाल। जागत गांव हमार

सब्जी वाली फसलों के उत्पादन में उसे रोगों से बचाना सबसे बड़ी चुनौती होती है। मिर्च की खेती में रोगों का प्रकोप अधिक होता है, जो हमारे फसल के उत्पादन को कम कर सकता है। किसानों को समय रहते रोगों का उचित उपचार करना चाहिए। जानिए मिर्च में लगने वाले प्रमुख रोगों, उनके लक्षण और उनके उचित उपचार के बारे में, जो उत्पादन को बढ़ाने में सहायता प्रदान करेंगे।

एंथ्रेकनोज (डाइबैक) एवं फल सड़न रोग- यह रोग कोलेटोट्राइकम केप्सिकी एवं फाइटोफ्थोरा नामक कवक से होता है। इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों और फलों पर अनियमित आकार के काले धब्बे दिखाई दिखाई देते हैं। यह हमारे फल की गुणवत्ता को कम कर देते हैं, पौध ऊपर से नीचे की ओर सूखने लगाता है इसीलिए इसे डाइबैक कहते हैं। जिससे बाजार में सही दाम नही मिल पाता है इस रोग के रोगाणु बीज व मृदा में जीवित रहते हैं।

रोकथाम- किसानों को प्रतिरोधी किस्म जैसे-जयन्त, अर्का लोहित. एक्स-235 किस्म की बोवनी करना चाहिए। फसल पर रोग के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यपी 0.05 फीसदी या डाईफेकोनाजोल आधा मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर किसान साथियों को फसल पर छिड़काव करना चाहिए। हैक्साकोनालौज 25 ईसी या डाईफनोकोनाजोल 25 ईसी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर फसल पर छिड़काव करना जाहिए।

लीफ कर्ल या माथा बंधना

यह विषाणु जनित रोग है जो जैमिनि वायरस के समूह (चीली लीफ कर्ल वायरस) से होता है सफेद मक्खी व थ्रिप्स इस रोग को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर फैलाते हैं इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियां अनियमित आकार की सिकुडकर मुड़ जाती है यह रोग नाइट्रोजन की अधिक मात्रा या नमी की अधिकता एवं अधिक समय तक तेज तापमान के कारण भी होता है।

ऐसे करें रोकथाम

एक-दो पौधों पर रोग के लक्षण दिखाई देने पर रोग ग्रसित पौधों को नष्ट कर दें, रोग फैलाने वाले कीट जैसे-सफेद मक्खी आदि को रोकने के लिए मिर्च की फसल वाले खेत के चारो तरफ बाजरा, गेहूँ जैसी नॉन होस्ट क्रॉप लगा सकते हैं। रासायनिक दवा डाइमिथोएट 30 ईसी या मिथाइल डिमेटोन 25 ईसी एक मिली लीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। रोग नियंत्रण के लिए 25 ग्राम डायफेन्युरान 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से रोग को नियंत्रित किया जा करता है।

जीवाणु पत्ती धब्बा रोग

यह रोग बीज एवं भूमि जनित रोग है जो जेन्थोमोनास बैसिक्टोरिया द्धारा उत्पन्न होता है। इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों पर छोटे-छोटे जलीय धब्बे बन जाते हैं जो गहरे भूरे रंग के हाथ से छूने पर खुरदरे प्रतीत होते है, पत्तियां पीली पड़कर गिर जाती हैं। लाल पके हुए फल पर इस रोग का प्रकोप नही होता है या न के बराबर होता है।

मध्यम प्रतिरोधी किस्म

किसान साथियों को मध्यम प्रतिरोधी किस्में जैसे- पंत सी-1, जे-218, जी-2, केसीएस-1 किस्म की बोवनी करना चाहिए। फसल चक्र अपनाना चाहिए। रासायनिक दवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 200 मिलीग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल में पुन छिड़काव करना चाहिए। किसान साथियों को ध्यान देना चाहिए कि फल बनते समय स्ट्रेप्टोसाइक्लिन दवा का छिड़काव न करें।

शीर्ष फूल गलन

यह रोग मिर्च में फिजिकल डिसऑर्डर के कारण होता है, जो कैल्शियम की कमी, पान की कम मात्रा, नाइट्रोजन और पोटाश की अधिक मात्रा या भूमि का अधिक पी.एच. होने के कारण उत्पन्न होता है इसमें फलो के किनारे काले धब्बे बन जाते हैं।

रोकथाम| किसान साथियों को मिर्च के पौध रोपण से पहले खेत के मिट्टी की जांच करा लेनी चाहिए। समय-समय पर सिंचाई करना चाहिए साथ ही पौधे पर लक्षण दिखाई देने पर फसल में कैल्शियम का स्प्रे करना चाहिए।

भोपाल के किसान मिश्रीलाल ने की पहली बार इसकी खेती

वैज्ञानिकों ने विकसित की खरबूजे की नई किस्म, ठंड में भी होगी खेती

भोपाल। जागत गांव हमार

पूसा सरदा और पूसा सुनहरी नाम से खरबूजे की नई किस्में विकसित की गई हैं। इस किस्मों के खरबूजों को गर्मी के अलावा सर्दियों के दिनों में भी उगाया जा सकता है। खास बात यह है कि खरबूजे को घर लाने के बाद 25 दिन तक रखा भी जा सकता है, जबकि आम खरबूजा दो से तीन दिन में ही खराब हो जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, पूसा में विकसित खरबूजे की इस प्रजाति की खेती भोपाल के खजूरीकला गांव के किसान मिश्रीलाल राजपूत ने पहली बार की है। मिश्रीलाल के मुताबिक, उन्होंने फरवरी में बीज लगाए थे, अब फसल तैयार है। प्रयोग सफल रहा और एक बेल में तीन से चार तक फल लगे हैं, जिनका वजन एक से डेढ़ किलो तक है। हाल ही में उन्होंने आधा एकड़ जमीन में खरबूजे की बोवनी की है। उसकी फसल मई के अंतिम सप्ताह में आने के बाद वह खरबूजा बाजार में बेचेंगे। इसके अलावा वह अक्टूबर में भी खरबूजे की फसल लगाएंगे।

दो फसल आसानी से ले सकते हैं

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली पूसा के विज्ञानी डॉ. हर्षवर्धन चौधरी ने बताया कि पूसा द्वारा विकसित खरबूजे की यह किस्म किसानों के लिए लाभकारी है। इसमें आम खरबूजे की तुलना में विटामिन ए और सी भी 25 प्रतिशत अधिक होगा। अक्टूबर और फरवरी में वर्ष में दो बार इसकी फसल आसानी से ली जा सकती है। इस खरबूजे की खासियत यह भी है कि इसे तोड़ने के बाद 25 दिन तक संग्रह करके रखा भी जा सकता है, जबकि आम खरबूजा दो दिन में ही खराब होने लगता है। पूसा सरदा खरबूजा पौधे में लगा ही रहता है। इसके लिए 30-35 डिग्री सेल्सियस तापमान ही काफी है।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

लाड़ली बहना योजना से बदलेगी महिलाओं की जिंदगी

'मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना मेरे दिल से निकली योजना है। बहनों के जीवन को सरल, सुखद बनाना ही मेरे जीवन का ध्येय है। बहनें सशक्त होंगी तो परिवार, समाज, प्रदेश और देश सशक्त होगा। यह योजना महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, आत्म-विश्वास और स्वाभिमान बढ़ाने के लिए है।'

- शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

योजना का उद्देश्य

- महिलाओं के स्वावलम्बन और उनके आश्रित बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सतत सुधार को बनाए रखना
- महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक आत्म-निर्भर बनाना
- परिवार स्तर पर निर्णय लिए जाने में महिलाओं की प्रभावी भूमिका को प्रोत्साहित करना

प्रत्येक पात्र बहन को प्रतिमाह 1000/- रुपये

पात्र हितग्राही को राशि का भुगतान उनके आधार लिंक्ड डीबीटी इनेबल्ड बैंक खाते में

25 मार्च से प्रारंभ हो गया है आवेदन भरवाना

आवेदन के लिए हर वार्ड और गाँव में लग रहे हैं शिविर

ई-के वाइ सी का शुल्क अदा कर रही है राज्य सरकार

योजना की पहली किस्त 10 जून को बहनों के खातों में होगी जमा

सशक्त महिला-सशक्त परिवार-सशक्त समाज-सशक्त मध्यप्रदेश D-17082/23

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)